लोक सभा

सोमवार, 2 दिसम्बर, 1996/11, अग्रहायण, 1918 (शक)

लोक सभा पूर्वाह्न 11 बजकर 4 मिनट पर समवेत हुई।

(अध्यक्ष महोदय पीठासीन हुए)

[अनुवाद]

निधन संबंधी उल्लेख

अध्यक्ष महोदय : माननीय सदस्यो, मुझे सदन को अत्यन्त दुख के साथ हमारे पूर्व सहयोगी डा. एम. चेन्ना रेड्डी के निधन के बारे में सूचित करना है। 1950-52 के दौरान डा. रेड्डी अंतरिम संसद के सदस्य थे। वह राज्य सभा के भी सदस्य रहे। वह 1967-68 के दौरान इस्पात और खान मंत्री भी रहे।

मूल रूप से कृषक डा. रेड्डी ने 1930 और 1940 के दशकों के दौरान कुछ युवा संगठनों की स्थापना की। डा. रेड्डी ने अपने राजनैतिक जीवन की शुरूआत 1950 में की थी। वह 1951 से 1956 तक हैदराबाद विधान सभा तथा 1956 से 1962 तक तथा 1962 से 1967 तक आन्ध्र प्रदेश विधान सभा के सदस्य रहे।

डा. रेड्डी ने आन्ध्र प्रदेश के मुख्य मंत्री तथा उत्तर प्रदेश और तमिलनाडु के राज्यपाल के रूप में भी कार्य किया। डा. रेड्डी ने कई देशों की यात्रा की और वह एक अनुभवी राजनीतिज्ञ थे। उन्होंने 1953 में खाद्य और कृषि संगठन के तत्वावधान में आयोजित विश्व कृषक सम्मेलन में भारतीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व किया। डा. रेड्डी का आज प्रातः निधन हो गया।

प्रधान मंत्री (श्री एच.डी. देवेगौड़ा) : अध्यक्ष महोदय, मैं तमिलनाडु के राज्यपाल डा. एम. चेन्ना रेड्डी के निधन पर हम सभी को हुई क्षति पर दुख प्रकट करता हूं और अपनी हार्दिक संवेदना प्रकट करता हूं। डा. रेड्डी ने अपने लम्बे राजनैतिक जीवन की शुरूआत हैदराबाद राज्य में राजनैतिक आन्दोलन से की। वह 1950 से हैदराबाद राज्य की राजनीति में सक्रिय थे और विभिन्न महत्वपूर्ण पदों पर रहे जैसे कृषि और खाद्य मंत्री, योजना और पुनर्वास मंत्री। तत्पश्चात आन्ध्र प्रदेश सरकार में वित्त मंत्री, शिक्षा और वाणिज्यिक कर मंत्री भी रहे। डा. रेड्डी 1967 में राज्य सभा के सदस्य बने और 1967-68 के दौरान केन्द्र में इस्पात और खान मंत्री के महत्वपूर्ण पद पर थे। वह 1974-77 तक उत्तर प्रदेश के राज्य पाल थे तथा 1977-80 तक तथा उसके बाद 1989-90 के दौरान आन्ध्र प्रदेश के मुख्य मंत्री थे। डा. चेन्ना रेड्डी ने पंजाब, राजस्थान और तमिलनाडु के राज्यपाल के रूप में राष्ट्र की सेवा की। डा. एम. चेन्ना रेड्डी के निधन से राष्ट्र ने अपना एक योग्य प्रशासक और एक अनुभवी सांसद खो दिया है। निःसंदेह इसकी क्षतिपूर्ति नहीं हो सकती है। मुझे विश्वास है कि आप सभी मेरे साथ दिवंगत डा. चेन्ना रेड्डी को श्रद्धांजलि अर्पित करेंगे और हम ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि वह उनके संबंधियों को यह दुख सहने की शक्ति प्रदान करे।

[हिन्दी]

डा. मुरली मनोहर जोशी (इलाहाबाद) : अध्यक्ष जी, श्री चेन्ना रेड्डी के निधन से इस देश के राजनैतिक और प्रशासनिक क्षेत्र में एक व्यक्ति का प्रादुर्भाव हुआ है। एक ऐसी पीढ़ी हमारे बीच से चली गई है जिसने इस देश की विभिन्न रूपों में सेवा की। श्री रेड्डी मेरे संबंध में उस समय आए जब वे उत्तर प्रदेश के राज्यपाल थे और हमारे विश्वविद्यालय के कुलपति थे। मैं अध्यापक संघ का महामंत्री था और उस रूप में श्री रेड्डी से मिलने का मुझे बहुत अवसर मिला। श्री रेड्डी ने अपने कार्यकाल में उत्तर प्रदेश में काम करते हुए जो अपने व्यवहार की और मृदुता की छाप छोड़ी, उससे वे बहुत दिनों तक वहां याद रखे जाएंगे। उन्होंने विभिन्न राज्यों में राज्यपाल के रूप में काम किया और विभिन्न संस्थाओं को जन्म दिया।

मैं अपनी ओर से और अपनी पार्टी की ओर से श्री रेड्डी के निधन पर शोक व्यक्त करता हूं और परमात्मा से प्रार्थना करता हूं कि उनकी आत्मा को शांति दे और उनके परिवार के प्रति संवेदना प्रकट करता हूं।

[अनुवाद]

श्री के. विजय भास्कर रेड्डी (कुरनूल) : महोदय, मैं कुछ दिन पूर्व डा. चेन्ना रेड्डी से एक विवाह समारोह में मिला था। वह स्वस्थ दिख रहे थे और ऐसा नहीं लगता था कि यह सब इतना अचानक हो जाएगा। हम सभी को यह जानकर अत्यधिक दुख हुआ कि डा. चेन्ना रेड्डी की मृत्यु हृदय गति रूक जाने के कारण हुई। वह एक स्वतंत्रता सेनानी थे। वह हैदराबाद के लोगों को स्वतंत्रता दिलाने के लिए लड़े थे। वह कई बार जेल गए। वह काफी कम उम्र में मंत्री बन गए थे। उनका जीवन काल लम्बा और उल्लेखनीय रहा।

वह दो बार आन्ध्र प्रदेश के मुख्य मंत्री रहे और केन्द्र मे भी मंत्री रहे। वह उत्तर प्रदेश तथा पंजाब के राज्यपाल रहे और अब तमिलनाडु के राज्यपाल थे तथा पांडिचेरी और गोवा के भी प्रभारी राज्यपाल थे।

उनकी विचारधारा प्रबल थी। उनकी इच्छाएं तथा अनिच्छाएं दोनों ही दृढ़ थीं। एक बार दोस्त बनने पर हमेशा दोस्ती निभाते थे। वह दोस्ती के लिए कुछ भी कर सकते थे। उन्होंने राज्य में मंत्री रहते हुए किसानों के लिए कई कार्य किए थे। वह किसानोन्मुखी मंत्री थे। जहां कहीं भी उन्होंने कार्य किया चाहे केन्द्र में हो अथवा राज्य में अथवा राज्यपाल के रूप में अपनी अमिट छाप छोड़ी। वह दीर्घकाल तक एक योग्य प्रशासक के रूप में याद किये जाते रहेंगे। वह एक बहुत अच्छे मित्र थे। एक राजनीतिज्ञ के रूप में वह 50 वर्ष तक केन्द्र तथा राज्य की राजनीति में सक्रिय रहे। उन्होंने कई लड़ाइयां सफलतापूर्वक लड़ी। वह प्रतिष्ठापूर्वक लड़ते थे और कोई अनुचित कार्य नहीं करते थे। ऐसा व्यक्ति पुनः पाना मुश्किल है। वह आजादी के लिए लड़े थे। वह स्वतंत्रता सेनानी थे। वह कुशल प्रशासक थे। उन्होंने प्रत्येक पद पर उल्लेखनीय कार्य किया। हमने एक बहुत अच्छा और महान मित्र खो दिया है। यह एक ऐसी क्षति है जिसकी आसानी से और